जब मशीनें बुद्धिमान हो रही हैं, तब क्या मनुष्य अपनी समझदारी खोता जा रहा है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का असली चेहरा: भविष्य की खोज या प्रकृति के अस्तित्व की कीमत?



आज दुनिया एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ बुद्धिमता को मशीनों में विकसित किया जा रहा है। जिस तकनीक को कभी विज्ञान की कल्पना माना जाता था, वह आज हमारे जीवन का हिस्सा बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) ने शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, संचार और अनुसंधान की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। कुछ ही क्षणों में कठिन प्रश्नों के उत्तर देना, विशाल आँकड़ों का विश्लेषण करना और ऐसे कार्य करना, जिनमें मनुष्य को घंटों लगते थे—अब मशीनों के लिए संभव हो गया है।

लेकिन इस चमकदार उपलब्धि के पीछे एक ऐसा प्रश्न छिपा है, जिस पर दुनिया उतनी गंभीरता से चर्चा नहीं कर रही, जितनी करनी चाहिए।

क्या हमने कभी सोचा है कि ए.आई. को चलाने की कीमत कौन चुका रहा है?

हम मोबाइल की स्क्रीन पर एक सवाल लिखते हैं और कुछ ही सेकंड में उत्तर प्राप्त कर लेते हैं। हमें लगता है कि यह सब केवल तकनीक का कमाल है। लेकिन उस छोटे-से उत्तर के पीछे विशाल डेटा सेंटर, हजारों सर्वर, भारी मात्रा में बिजली, पानी और संसाधनों की आवश्यकता होती है। ये डेटा सेंटर चौबीसों घंटे काम करते हैं। इन्हें ठंडा रखने के लिए भी ऊर्जा और पानी की जरूरत पड़ती है।

अर्थात, हमारी स्क्रीन पर दिखाई देने वाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक वास्तविक भौतिक संसार भी है, जो हमारी आँखों से ओझल रहता है।

विडंबना देखिए, जिस तकनीक को मानव जीवन आसान बनाने के लिए विकसित किया जा रहा है, उसी तकनीक की बढ़ती मांग प्राकृतिक संसाधनों पर नया दबाव पैदा कर सकती है। एक तरफ दुनिया जलवायु परिवर्तन, जल संकट और ऊर्जा संकट से जूझ रही है, दूसरी तरफ ए.आई. की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए नए-नए डेटा सेंटर बनाए जा रहे हैं।

यहाँ प्रश्न ए.आई. के अस्तित्व का नहीं, बल्कि उसके विकास की दिशा का है।

क्या विकास का अर्थ केवल अधिक शक्तिशाली मशीनें बनाना है? क्या किसी आविष्कार की सफलता का मापदंड सिर्फ उसकी गति, क्षमता और मुनाफा होना चाहिए? यदि किसी तकनीकी उपलब्धि के पीछे प्रकृति का असंतुलन बढ़ रहा है, तो क्या उसे बिना प्रश्न किए प्रगति कहा जा सकता है?

विज्ञान का उद्देश्य प्रकृति पर विजय प्राप्त करना नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर मानव जीवन को बेहतर बनाना होना चाहिए।

आज दुनिया की दौड़ में शामिल है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ अपनी तकनीकी क्षमता बढ़ाने के लिए निवेश कर रही हैं। देश इस क्षेत्र में आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। लेकिन इस प्रतिस्पर्धा में एक बुनियादी प्रश्न पीछे छूटता दिखाई देता है—क्या हमारे पास इतनी ऊर्जा, पानी और प्राकृतिक संसाधन हैं कि हम इस विकास को लंबे समय तक बनाए रख सकें?

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश के लिए यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण है। हमारे सामने पहले से ही स्वच्छ पानी, ऊर्जा की उपलब्धता, प्रदूषण और पर्यावरण संरक्षण जैसी बड़ी चुनौतियाँ हैं। ऐसे में का विस्तार करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि तकनीकी विकास आम नागरिकों के जीवन और प्राकृतिक संसाधनों की कीमत पर न हो।

यह समझना भी जरूरी है कि स्वयं कोई शत्रु नहीं है। चिकित्सा में रोगों की पहचान से लेकर किसानों को मौसम संबंधी जानकारी देने तक, शिक्षा को सुलभ बनाने से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान को गति देने तक, इसके अनगिनत सकारात्मक उपयोग हैं। समस्या तकनीक में नहीं, बल्कि उस दृष्टिकोण में है जिसमें लाभ को प्राथमिकता और उसके दुष्प्रभावों को गौण मान लिया जाता है।

हमें ऐसे की आवश्यकता है जो केवल अधिक बुद्धिमान ही नहीं, बल्कि अधिक जिम्मेदार भी हो। ऊर्जा-कुशल डेटा सेंटर, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, पानी की खपत में कमी, पारदर्शी पर्यावरणीय मानक और जिम्मेदार तकनीकी नीतियाँ अब विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुकी हैं।

एक और गंभीर पहलू है—मानव की निर्भरता। यदि हम अपनी सोचने, प्रश्न करने, निर्णय लेने और रचनात्मकता की क्षमता को पूरी तरह मशीनों के हवाले कर देंगे, तो तकनीक हमारी सहायक नहीं, हमारी आदत और अंततः हमारी सीमा बन सकती है। मशीनें सूचनाएँ दे सकती हैं, लेकिन उन सूचनाओं का नैतिक अर्थ समझना और उनके परिणामों की जिम्मेदारी लेना मनुष्य का ही दायित्व है।

हमें यह तय करना होगा कि हमारा साधन रहेगा या हम उसके विस्तार के साधन बनकर रह जाएँगे।

अंततः, किसी सभ्यता की महानता इस बात से निर्धारित नहीं होती कि उसने कितनी शक्तिशाली मशीनें बना लीं, बल्कि इस बात से होती है कि उसने अपनी शक्ति का उपयोग कितना विवेकपूर्ण ढंग से किया।

हम ऐसा भविष्य नहीं चाहते जहाँ मशीनें हर प्रश्न का उत्तर जानती हों, लेकिन मनुष्य अपने अस्तित्व से जुड़े सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना भूल जाए।

तकनीक का विकास अवश्य होना चाहिए, लेकिन उस विकास की नींव प्रकृति के विनाश पर नहीं रखी जा सकती। हमें ऐसा भविष्य बनाना है जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्राकृतिक बुद्धिमत्ता एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी हों।

क्योंकि अंत में एक सच्चाई कभी नहीं बदल सकती।

यदि विकास की दौड़ में हमने अपनी धरती, अपना पानी और अपनी प्रकृति ही खो दी, तो सबसे बुद्धिमान मशीनें भी हमारे लिए एक बेहतर भविष्य नहीं बना पाएँगी।

प्रश्न के भविष्य का नहीं है। प्रश्न यह है कि भविष्य में मानवता और प्रकृति का भविष्य कितना सुरक्षित रहेगा?

सलोनी विपुलकुमार ठाकर
पालनपुर, गुजरात

ज़ी सिनेमा और ज़ी5 पर 2 दिसंबर को रात 8 बजे एक साथ होगा 'शतकः संघ के 100 वर्ष' का प्रीमियर

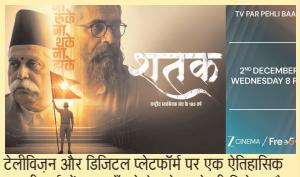

टेलीविज़न और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एक ऐतिहासिक कहानी दर्शकों तक पहुँचाने के उद्देश्य से ज़ी सिनेमा और ज़ी5 का फ़ी5 एक साथ 'शतक- संघ के 100 वर्ष' का प्रीमियर करने जा रहे हैं। यह फिल्म बुधवार, 2 दिसंबर को रात 8 बजे एक साथ ज़ी सिनेमा और ज़ी5 के फ़ी5 पर दिखाई जाएगी।

आशीष मॉल के निर्देशन में बनी इस फिल्म के निर्माता वीर कपूर हैं, जबकि आशीष तिवारी इसके सह निर्माता हैं। फिल्म को 'अटा 360 डिग्री एलएलपी' के बैनर तले निर्मित किया गया है। एक साथ होने वाले इस प्रीमियर के माध्यम से दर्शकों को अपनी पसंद के अनुसार ज़ी सिनेमा पर टेलीविज़न या ज़ी5 के फ़ी5 पर डिजिटल माध्यम से फिल्म देखने का मौका मिलेगा।राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के 100 साल के सफर को दिखाती 'शतक- संघ के 100 वर्ष' दर्शकों को संगठन की शुरुआत, उसके विकास और भारत के इतिहास के अलग-अलग दौर में उसकी यात्रा से रूबरू कराएगी।

टाईरन ट्रैवल मार्केटिंग ने मल्टी-सिटी ट्रेड रोडशो के साथ पूरे भारत में रॉयल कैरेबियन इंटरनेशनल का विस्तार किया

TIRUN
Just Cruise

भारत की अग्रणी क्रूज वेकेशन विशेषज्ञ और भारत में रॉयल कैरेबियन ग्रुप की एकमात्र प्रतिनिधि टाईरन ट्रैवल मार्केटिंग देश भर में मल्टी-सिटी रोडशो का आयोजन कर रही है, ताकि अपने ट्रैवल ट्रेड नेटवर्क को मजबूत किया जा सके और भारत में क्रूज पर्यटन के विकास को गति दी जा सके।

यह रोडशो रॉयल कैरेबियन इंटरनेशनल के विविध क्रूज अनुभवों को भारत के ट्रैवल ट्रेड समुदाय के करीब लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे उत्पाद की बेहतर समझ, बाजार जुड़ाव और देश भर के ट्रैवल एजेंटों और टूर ऑपरेटरों के साथ मजबूत साझेदारी के अवसर पैदा होंगे।

यह पहल भारत भर के ट्रैवल ट्रेड पार्टनर्स तक रॉयल कैरेबियन इंटरनेशनल की पेशकशों को पहुंचाएगी, जिसमें महानगरीय केंद्रों और विभिन्न क्षेत्रों के उभरते बाजारों तक आउटरीच शामिल होगी। इस आउटरीच के माध्यम से, टाईरन का लक्ष्य पारंपरिक महानगरों से परे क्रूज जागरूकता का विस्तार करना, क्षेत्रीय ट्रैवल एजेंटों और टूर ऑपरेटरों के साथ जुड़ाव को मजबूत करना और उन बाजारों में व्यापक वितरण नेटवर्क बनाना है जहाँ क्रूज पर्यटन की विकास क्षमता है।

प्रत्येक रोडशो में शहरों के आधार पर लगभग 80-140 ट्रेड पार्टनर्स के शामिल होने की उम्मीद है, जिससे संबंधों को मजबूत करने, उत्पाद जागरूकता बनाने और क्रूज बुकिंग को बढ़ावा देने के अवसर पैदा होंगे।

ये सत्र मुख्य रूप से रॉयल कैरेबियन इंटरनेशनल पर केंद्रित होंगे, जिसमें टाईरन के प्रतिनिधि ब्रांड के वैश्विक बेड़े, आगामी क्रूज, यात्रा कार्यक्रम और जहाज पर मिलने वाले अनुभवों को प्रदर्शित करेंगे। मुख्य आकर्षणों में नेविगेटर ऑफ द सीज़, लीजेंड ऑफ द सीज़, आइकन ऑफ द सीज़ और आगामी हीरो ऑफ द सीज़ शामिल होंगे। प्रस्तुतियों में सिंगापुर से नेविगेटर ऑफ द सीज़ की साल भर की यात्राओं, फोर्ट लॉडरडेल से लीजेंड ऑफ द सीज़ की यात्राओं और अगस्त 2027 में हीरो ऑफ द सीज़ के लॉन्च पर भी प्रकाश डाला जाएगा।

अतीत की विफलताओं से प्रेरणा लें

चिंतन

विफलता अंत नहीं, नई शुरुआत का अवसर हजीवन में सफलता प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा होती है, लेकिन सफलता का मार्ग सदैव सरल नहीं होता। इस मार्ग पर अनेक चुनौतियाँ, बाधाएँ और विफलताएँ आती हैं। जो व्यक्ति विफलताओं से निराश होकर प्रयास करना छोड़ देता है, वह अपनी संभावनाओं को सीमित कर लेता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अपनी गलतियों से सीखकर आगे बढ़ता है, वही वास्तविक सफलता का अधिकारी बनता है।

अतीत की विफलताएँ हमारे जीवन की ऐसी शिक्षक हैं, जो अनुभव के माध्यम से हमें सही दिशा दिखाती हैं। प्रत्येक असफल प्रयास हमें अपनी कमियों को पहचानने, अपनी कार्यशैली में सुधार करने और भविष्य के लिए बेहतर तैयारी करने का अवसर देता है। आवश्यक यह है कि हम विफलताओं को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी क्षमता को निखारने का माध्यम समझें।



अक्सर व्यक्ति अपनी असफलताओं को याद करके आत्मग्लानि से भर जाता है। वह बार-बार यह सोचता है कि उससे कहाँ चूक हुई और क्यों वह अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं कर सका। किंतु केवल पश्चाताप करने से परिस्थितियाँ नहीं बदलतीं। विफलता का वास्तविक लाभ तभी मिलता है, जब हम उससे सीख लेकर अपने वर्तमान प्रयासों को अधिक प्रभावी बनाते हैं। अतीत को बदलना संभव नहीं, लेकिन अतीत से मिली सीख के आधार पर भविष्य को बेहतर बनाया जा सकता है।

जीवन में असफलता का अर्थ यह नहीं कि हमारी योग्यता समाप्त हो गई है। कई बार परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं होतीं, प्रयासों में कमी रह जाती है अथवा हमारी रणनीति अपेक्षित परिणाम नहीं देती। ऐसे समय में धैर्य, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना आवश्यक है। अपनी गलतियों को स्वीकार करना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मविकास की पहली सीढ़ी है। सफलता उन्हीं लोगों के कदम चूमती है, जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहते हैं। अतीत की विफलताओं को अपनी प्रगति में बाधा बनने देने के बजाय उन्हें भविष्य की सफलता का आधार बनाना चाहिए। प्रत्येक नया दिन स्वयं को सुधारने और अपनी क्षमताओं को सिद्ध करने का अवसर लेकर आता है।

विफलताओं से भयभीत होने



के बजाय उनसे प्रेरणा लें। अतीत की गलतियों को अनुभव बनाइए, वर्तमान के प्रयासों को मजबूत कीजिए और भविष्य के प्रति आशावान रहिए। विफलता हमें रोकने नहीं, बल्कि सफलता के लिए तैयार करने आती है।

@ डॉ सुरेन्द्र मीणा

Kia Sorento ने पार किया 4,500 होलसेल का आंकड़ा, सितंबर 2026 से ग्राहकों की मज़बूत प्रतिक्रिया

नई दिल्ली: Kia India ने घोषणा की कि उसकी प्रीमियम SUV, Kia Sorento, ने सितंबर 2026 में बुकिंग शुरू होने के बाद से 4,500 होलसेल यूनिट का आंकड़ा पार कर लिया है।

उन्नत तकनीक, इलेक्ट्रिफाइड परफ़ॉर्मेंस, प्रीमियम आराम और व्यापक सुरक्षा का मेल पेश करने वाली Sorento की विशिष्ट पेशकश को बाज़ार से मिली उत्साहजनक प्रतिक्रिया इस उपलब्धि में झलकती है। इसके आकर्षण को और बढ़ाते हुए, Sorento Kia Assured Buyback Programme के तहत तीन वर्ष बाद 70 प्रतिशत तक का उद्योग-अग्रणी सुनिश्चित अवशिष्ट मूल्य प्रदान करती है, जो लागू माइलेज सीमा तथा कार्यक्रम के नियमों एवं शर्तों के अधीन है।

इस उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए, श्री लूट सूल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष – मार्केटिंग एवं सेल्स, Kia India ने कहा, 4,500 होलसेल का आंकड़ा पार करना Kia Sorento के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और यह ग्राहकों की मज़बूत प्रतिक्रिया तथा ब्रांड में बढ़ते विश्वास को दर्शाती है। हमारा लक्ष्य ग्राहकों को वास्तव में बेहतर, अपनी श्रेणी से कहीं आगे का अनुभव देना था, जिसमें वैश्विक मानकों वाली तकनीक को प्रीमियम आराम और बहुमुखी परफ़ॉर्मेंस के साथ जोड़ा गया है। Sorento को मिली उत्साहजनक प्रतिक्रिया उस भरोसे का प्रमाण है जो ग्राहकों ने Kia पर



जताया है, और भारत में हमारे प्रीमियम SUV पोर्टफ़ोलियो की बढ़ती स्वीकार्यता का भी। हम अपने ग्राहकों, डीलर पार्टनर्स और उन सभी हितधारकों के आभारी हैं जिन्होंने इस सफलता में योगदान दिया है। आगे बढ़ते हुए, हम प्रीमियम सेगमेंट में अपनी उपस्थिति को और मज़बूत करने तथा ऐसे अनुभव देने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो ग्राहकों की अपेक्षाओं से हमेशा आगे रहें।

Sorento की एक प्रमुख विशेषता है रियल-टाइम जेनरेटिव AI से संचालित Kia AI Assistant, जो वैश्विक स्तर पर Kia के लिए पहली बार है। 'Hey Kia' वॉयस कमांड से सक्रिय होने वाला यह असिस्टेंट फ़ॉलो-अप सवालों के जवाब दे सकता है, रियल-टाइम जानकारी उपलब्ध करा सकता है और एयर-कंडीशनिंग तथा विंडो जैसे फ़ंक्शन नियंत्रित कर सकता है। तकनीकी अनुभव को Kia Connect 2.0 और निखारता है, जो 85 से अधिक कनेक्टेड-कार फ़ीचर्स, 30 कंट्रोलर्स के लिए OTA अपडेट और Digital Key 2.0 प्रदान करता है।

Sorento ग्राहकों की अलग-अलग पसंद को पूरा करने के लिए दो पावरट्रेन विकल्प प्रदान करती है। इसका 1.6-लीटर Turbo GDI हाइब्रिड पावरट्रेन 180 PS के पेट्रोल इंजन को 65 PS की इलेक्ट्रिक मोटर के साथ जोड़ता है और इसमें छह-स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन दिया गया है। हाइब्रिड वेरिएंट 19.6 किमी/लीटर की PS PS प्रमाणित ईंधन दक्षता प्रदान करता है। वहीं, 2.2-लीटर डीज़ल इंजन 193 PS की पावर और 442 PS का टॉर्क पैदा करता है और इसे आठ-स्पीड DCT के साथ जोड़ा गया है।

अपनी ड्राइविंग क्षमताओं को और बढ़ाते हुए, Sorento दोनों पावरट्रेन विकल्पों के साथ टेरेन मोड्स के साथ ऑल-व्हील ड्राइव (AWD) प्रदान करती है, जो अलग-अलग सड़क परिस्थितियों में अतिरिक्त ट्रैक्शन और नियंत्रण देती है। यह अपने सेगमेंट की पहली SUV भी है जो हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ AWD प्रदान करती है।

डॉ. कृति भारती का नाम 55 बाल विवाह निरस्त और 3 हजार से अधिक रुकवाने पर वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

साथी ट्रस्ट की डॉ. कृति के नाम अब तक 11 वर्ल्ड और नेशनल रिकॉर्ड; देश का पहला बाल विवाह निरस्त करवाने से लेकर रोकथाम तक कायम किए ऐतिहासिक कीर्तिमान

जोधपुर। अंतरराष्ट्रीय बाल विवाह उन्मूलन दिवस के अवसर पर साथी ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी, पुनर्वास मनोवैज्ञानिक एवं चाइल्ड राइट्स एक्टिविस्ट डॉ. कृति भारती की बाल विवाह के खिलाफ साहसिक मुहिम ने एक बार फिर वैश्विक स्तर पर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। विश्व में सर्वाधिक 55 बाल विवाह निरस्त करवाने और 3 हजार से अधिक बाल विवाह रुकवाने के लिए डॉ. कृति भारती और साथी ट्रस्ट का नाम वर्ल्ड रिकॉर्ड्स इंडिया में दर्ज किया गया है। इसके साथ ही बाल विवाह निरस्तीकरण एवं रोकथाम के क्षेत्र में डॉ. कृति के नाम अब तक 11 वर्ल्ड और नेशनल रिकॉर्ड दर्ज हो चुके हैं। संभवतः यह विश्व में पहला अवसर है, जब किसी एक्टिविस्ट और सामाजिक संस्था ने बाल विवाह उन्मूलन के प्रयासों में संयुक्त रूप से इतने रिकॉर्ड कायम किए हैं।

बीबीसी की 100 प्रेरणादायी महिलाओं और वर्ल्ड टॉप टेन एक्टिविस्ट की सूची में शामिल डॉ. कृति भारती ने वर्ष 2012 में देश



का पहला बाल विवाह निरस्त करवाकर नया इतिहास रचा था। इसके बाद उन्होंने राजस्थान के विभिन्न न्यायालयों में स्वयं पैरवी करते हुए अब तक लगातार 55 बाल विवाह निरस्त करवाए हैं। व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयासों के माध्यम से बाल विवाह निरस्त करवाने का यह आंकड़ा विश्व में सर्वाधिक है। इसके अतिरिक्त डॉ. कृति ने देशभर में 3 हजार से अधिक बाल विवाह रुकवाएं हैं। वर्ल्ड रिकॉर्ड्स इंडिया ने 55 बाल विवाह निरस्त करवाने और 3 हजार से अधिक बाल विवाह रुकवाने की उपलब्धि को रिकॉर्ड बुक में शामिल किया है।

11 रिकॉर्ड्स में दर्ज हो चुका है डॉ. कृति का नाम

हौसलों की उड़नपरी और रियल शेरनी ऑफ इंडिया के नाम से मशहूर डॉ. कृति भारती का नाम अब तक कुल 11 वर्ल्ड और नेशनल रिकॉर्ड्स में दर्ज हो चुका है। देश का पहला बाल विवाह निरस्त करवाने की ऐतिहासिक उपलब्धि को वर्ल्ड रिकॉर्ड और लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स सहित प्रतिष्ठित रिकॉर्ड बुक्स में स्थान मिल चुका है। अब तक 55 जोड़ों के बाल विवाह निरस्त करवा चुकीं डॉ. कृति ने महज तीन दिन की न्यायिक प्रक्रिया में दो जोड़ों के बाल विवाह निरस्त करवाने का भी रिकॉर्ड कायम किया था। इस उपलब्धि को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, वर्ल्ड रिकॉर्ड इंडिया, यूनिक वर्ल्ड रिकॉर्ड और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए डॉ. कृति भारती को राजस्थान के पूर्व मुख्य न्यायाधीश द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है। डॉ.कृति की मुहिम सीबीएसई के पाठ्यक्रम में भी शामिल हो चुकी है। उनको कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा चुका है।